UGC NET JRF... Paper =2 Sanskrit

UNIT=2

Class-14

6 pm

Filler Form

YouTube

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A. , now Ph.d running

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

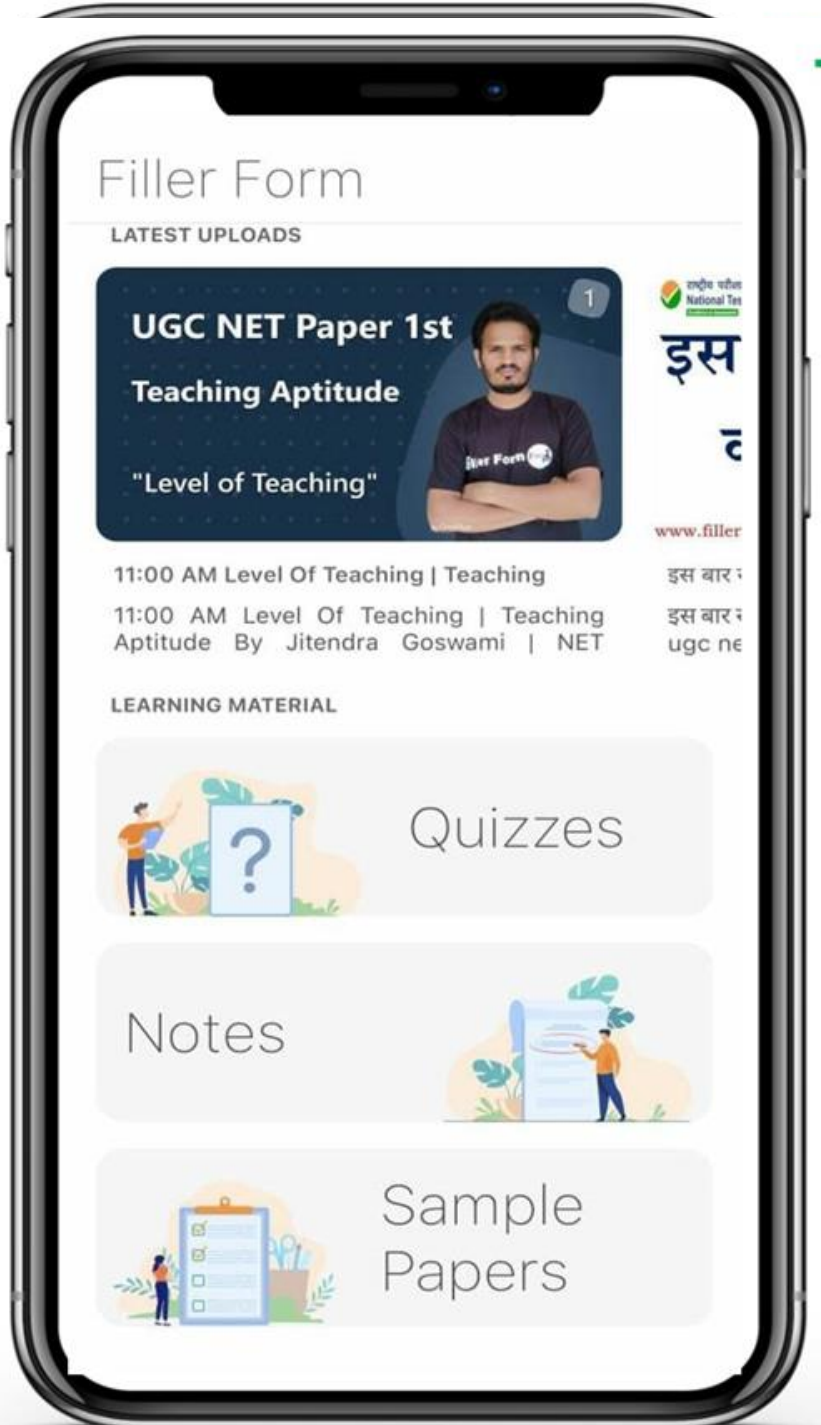

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

100% OFF

fillerform

8209837844
www.ugc-net.com

Unit_2 वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- = ऋग्वेद : एक परिचय
- = ऋग्वेद - संहिता सूक्त
- = शुक्लयजुवेद -संहिता सूक्त
- = कृष्ण यजुर्वेद - एक परिचय
- = अथवॅवेद -संहिता सूक्त
- = बाह्मण- साहित्य विधि एवं उनके प्रकार
- = उपनिषद् - साहित्य वैदिक व्याकरण,
  = निरूक्त एवं वैदिक व्याख्या- पद्धति

8209837844

www.ugc-net.com

✸ उपनिषद् - साहित्य वैदिक व्याकरण ✸

ईशोपनिषद् (यजुर्वेद–अध्याय–40)

'यजुर्वेद' का चालीसवाँ अध्याय ज्ञानपरक है। इसे 'ईशावास्योपनिषद्' के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसकी विशेषता के सम्बन्ध में आचार्य महीधर ने भी लिखा है कि यज्ञकर्म से शुद्ध हुए अंत:करण को आत्मज्ञान–परमात्म–ज्ञान से संस्कारित करने के उद्देश्य से ऋषियों ने यह अंतिम अध्याय उत्कृष्ट ज्ञान–सूत्रों के रूप में स्थापित किया है।

ऋषि, देवता और छन्द–विवरण

ऋषि–दध्यङ् आथर्वण 1–14। दध्यङ् आथर्वण, ब्रह्मा 15,17। अगस्त्य 16।

देवता–आत्मा 1–14, 17। आत्मा, परमात्मा 15। अग्नि 16।

छन्द–अनुष्टुप् 1, 3, 5, 9–11, 13, 17। भुरिक् अनुष्टुप् 2। निचृत् त्रिष्टुप् 4, 16। निचृत् अनुष्टुप् 6–7, स्वराट् जगती 8, स्वराट् उष्णिक् 14,15।

कठोपनिषद्

'कठोपनिषद्' दो अध्यायों में विभक्त है। इन दोनों अध्यायों के अन्तर्गत तीन-तीन वल्लियाँ हैं। प्रथम अध्याय के प्रथमा वल्ली में वाजश्रवस का दान, नचिकेता की शंका, वाजश्रवस-नचिकेता-संवाद, नचिकेता का यम-लोक-प्रस्थान, यमराज का वर प्रदान इत्यादि का वर्णन है। ज्ञात हो कि नचिकेता ने यमराज से प्रथम वर के रूप में पितृ-परितोष, द्वितीय वर में स्वर्ग-साधनभूत अग्नि-विद्या और तृतीय वर के रूप में आत्म-रहस्य की जानकारी माँगा था।

प्रथमा वल्ली

ॐ उशन्ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ। तस्य ह
नचिकेता नाम पुत्र आस॥1॥

प्रसिद्ध है कि यज्ञफल के इच्छुक वाजश्रवा के पुत्र ने [विश्वजित्-यज्ञ में] अपना सारा धन दे दिया। उसका नचिकेता नामक एक प्रसिद्ध पुत्र था।

8209837844 www.ugc-net.com

केनोपनिषद्

'ॐ केनेषितं पतति मनः' वाक्य से प्रारम्भ होने के कारण इसका नाम 'केनोपनिषद्' पड़ा है। इसमें चार खंड हैं। प्रथम खंड में उपास्य ब्रह्म तथा निर्गुण ब्रह्म में अंतर बताया गया है। द्वितीय खंड में ब्रह्म के रहस्यमय रूप संकेतित है। तृतीय और चतुर्थ खंड में यक्ष के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए अग्नि और वायु को असफलता मिलने के बाद इंद्र ने उमा-हेमवती के समीप जाकर उनसे पूछा और उनसे यक्ष-रूपी ब्रह्म के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की—**सा ब्रह्मोति होवाच।** इस प्रकार प्रथम दो खंडों में उमा-हेमवती के आख्यान से देवताओं

8209837844

www.ugc-net.com

बृहदारण्यकोपनिषद्

सामान्य परिचयः

बृहदारण्यकोपनिषदियं न केवलं तत्त्वज्ञानदृष्ट्या अतीव प्रामाणिका वर्तते, अपितु आकारदृष्ट्यापि अतीवविशालास्ति। षडध्याय-समन्वितेऽस्मिन् उपनिषद्ग्रन्थे याज्ञवल्क्यस्य ब्रह्मविषयकं तत्त्वज्ञानमतीव विस्तरेण निरूपितमस्ति। प्रथमे अध्याये तु प्राणश्रेष्ठताया: सृष्टिविषयकं सिद्धान्तं वर्णितमस्ति। द्वितीयेऽध्याये काशिराजस्याजातशत्रो: ब्रह्मविद्याया: ज्ञानेन दृप्तस्य गार्ग्यस्य वर्णनमतीव रोचकमस्ति। तृतीय-चतुर्थाध्याययो: जनक-याज्ञवल्क्ययो: संवादोऽस्ति। पञ्चमाध्याये विविध-दार्शनिक-विषयाणां विवेचनमस्ति। षष्ठाध्याये प्रवहणजैवले: श्वेतकेतुरारुणे च दार्शनिक-संवाद: संगृहीतोऽस्ति। अस्मिन् अध्याये प्रवहणजैवलि: पञ्चाग्निविद्याया: विशदं विवेचनम् अस्ति।

8209837844 www.ugc-net.com

तैत्तिरीयोपनिषद्

शिक्षावल्ली

प्रथम अनुवाक्

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः।
शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः।
शं नो विष्णुरुरुक्रमः नमो ब्रह्मणे।
नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु।
अवतु माम्। अवतु वक्तारम्॥
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः॥1॥

[प्राणवृत्ति और दिन का अभिमानी देवता] मित्र (सूर्य देव) हमारे लिए सुख कर हो। [अपानवृत्ति और रात्रि का अभिमानी] वरुण हमारे लिए सुखावह हो। [नेत्र और सूर्य का अभिमानी देवता] अर्यमा हमारे लिए सुखप्रद हो। बल का अभिमानी इन्द्र तथा [वाक् और बुद्धि का अभिमानी देवता] बृहस्पति हमारे लिए शांतिदायक हो तथा जिसका पाद-विक्षेप (डग) बहुत विस्तृत है, वह [पादाभिमानी देवता] विष्णु हमारे लिए सुखदायक हो। ब्रह्म [रूप वायु]-को नमस्कार है। हे वायो! तुम्हें नमस्कार है। तुम ही प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। अतः तुम्हीं को मैं प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा। तुम्हीं को ऋत (शास्त्रोक्त निश्चित अर्थ) कहूँगा और [क्योंकि वाक् और शरीर से संपन्न होनेवाले कार्य भी तुम्हारे ही अधीन हैं इसलिए] तुम्हीं को मैं सत्य कहूँगा। अतः तुम [विद्या दान के द्वारा] मेरी रक्षा करो तथा ब्रह्म का निरूपण करनेवाले आचार्य की भी [उन्हें वक्तृत्व-सामर्थ्य देकर] रक्षा करो। मेरी रक्षा करो और वक्ता की रक्षा करो। आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक तीनों प्रकार के तापों की शांति हो।

आनन्दवल्ली

प्रथम अनुवाक्

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्त। सहवीर्यं करवाव है तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।।

ॐ शांतिः! शांतिः!! शांतिः!!!

[वह परमात्मा] हम [आचार्य और शिष्य] दोनों की साथ-साथ रक्षा करें, हम दोनों का साथ-साथ पालन करे, हम साथ-साथ वीर्य लाभ करें, हमारा अध्ययन किया हुआ तेजस्वी हो और हम परस्पर द्वेष न करें। तीनों प्रकार के प्रतिबंधों की शांति हो।

ब्रह्मविदाप्नोति परम्। तदेषाभ्युक्ता। सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्। सोऽश्नुमते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति। तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः। संभूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथ्वी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नात्पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नारसमयः। तस्येदमेव शिरः। अयं दक्षिणः पक्षः। अयमुत्तरः पक्षः। अयमात्मा। इदं पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति।।1।।

भृगुवल्ली

प्रथम अनुवाक्

भृगुर्वै वारुणिः वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति। तस्मा एतत्प्रोवाच। अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमिति। त ꣳ होवाच। यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। तद्विजिज्ञासस्व। तद् ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा॥1॥

वरुण का सुप्रसिद्ध पुत्र भृगु अपने पिता वरुण के पास गया (और बोला—) 'भगवन्! मुझे ब्रह्म का बोध कराएँ।' उससे वरुण ने यह कहा—'अन्न, प्राण, नेत्र, श्रोत्र, मन और वाक् (ये ब्रह्म की उपलब्धि के द्वार हैं)।' फिर उससे कहा—'जिससे निश्चय ही ये सब भूत उत्पन्न होते हैं, उत्पन्न होने पर जिसके आश्रय से ये जीवित रहते हैं और अंत में विनाशोन्मुख होकर जिसमें ये लीन होते हैं, उसे विशेष रूप से जानने की इच्छा कर, वही ब्रह्म है।' तब उस (भृगु)- ने तप किया और उसने तप करके—

8209837844 www.ugc-net.com

श्वेताश्वतरोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

प्रथमोऽध्यायः

हरिः ॐ ब्रह्मवादिनो वदन्ति-

किं कारणं ब्रह्म कुतः स्म जाता जीवाम केन क्व च सम्प्रतिष्ठाः।
अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु वर्तामहे ब्रह्मविदो व्यवस्थाम्॥1॥

निरूक्त एवं वैदिक व्याख्या - पद्धति

We Want JRF

FEEDBACK

💥 आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝 Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

THANK YOU